

**Title:** Regarding police attack on the people holding a dharna against the use of English and demanding promotion of the lingua franca.

**डा. रघुवंश प्रसाद सिंह :** अध्यक्ष महोदय, लोक सेवा आयोग के सामने 14 वॉ से देशी भााओं की तरक्की के लिए और अंग्रेजी भाा के खिलाफ वहां पर धरना चल रहा था। उस धरने में माननीय प्रधान मंत्री जब विपक्ष में थे, तीन-चार बार शामिल हो चुके थे। लेकिन उस धरने को पुलिस वालों ने बर्बाद करने का काम किया और धरना दे रहे लोगों का सारा सामान उठाकर फेंक दिया। कभी दिल्ली में नादिरशाही चलती थी, उस तरह का काम आज भी हो रहा है और वही जुल्म हो रहा है। मैं जानना चाहता हूं देशी भााओं के लिए सरकार की क्या नीति है ? इन्होंने जो यह कार्रवाई की है, उस धरना स्थल को ध्वस्त करके साबित होता है कि सरकार देशी भााओं के विरुद्ध है, यह सरकार उनको प्रमोट नहीं करना चाहती। मैं सरकार से इस स्पट वक्तव्य चाहता हूं कि भारतीय भााओं के सम्बन्ध में इनकी क्या नीति है, नहीं तो लड़ाई जारी रहेगी। अंग्रेजी में काम नहीं होगा, फिर से देश गुलाम नहीं होगा, डा. लोहिया की यह अभिलाषा -- चले देश में अपनी भाा, चले देश में अपनी भाा - वह दिन दूर नहीं कि 21वीं, सदी में हिन्दुस्तान में हिन्दी और दुनिया में यह विश्व भाा के रूप में रहेगी। यह हिन्दी में क्षमता है और यह प्रभावशाली भाा बनकर रहेगी।

**श्री विजय गोयल (चांदनी चौक) :** अध्यक्ष महोदय, मैं भी अपने को इनके साथ सम्बद्ध करता हूं।

वै। (व्यवधान)

**डा. रघुवंश प्रसाद सिंह :** इसलिए हिन्दी भाा को तरजीह दी जाए।

**अध्यक्ष महोदय :** अब आप बैठ जाएं, आपको काफी सपोर्ट मिल गई है।